ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(7): 131-135
www.allresearchjournal.com
Received: 06-05-2023
Accepted: 10-06-2023

Mohammad Fida Alakozay
Ph.D. Scholar, Lucknow University, Lucknow Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Mohammad Fida Alakozay
Ph.D. Scholar, Lucknow University, Lucknow Uttar Pradesh, India

पश्तून साहित्यकार गुलपाचा उल्फत का जीवन परिचय

Mohammad Fida Alakozay

सारांश

गुलपाचा उल्फत पश्तो साहित्य के अधुनिक काल के प्रसिद्ध एवं प्रतिनिधि साहित्यकार थे। वे 1909 ई0 में अफगानिस्तान के लगमान राज्य में जन्मे थे। उनके पिता का नाम मीरसैय्यद पाचा था। गुलापाचा उल्फत की मातृ भाषा पश्तो है। वे पश्तो भाषा में साहित्य सृजन कार्य करते थे, जो पश्तो साहित्य में एक विशेष महत्व रखते है। वे पश्तो साहित्य के आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवि हैं। अफग़ानिस्तान में पश्तो के बाद आधिक फार्सी बोली जाती है । प्रायः अन्य पश्तून लोगों जैसे गुलपा उल्फत फार्सी भाषा भी जानते थे, उसमें अध्ययन करते थे । फार्सी भाषा के सुप्रसिद्ध और माननीय कवियों की रचनाओं को पढ़ते थे। उन्होंने फारसी भाषा में कविताएँ और कुछ निबंध भी लिखे थे जिसका फार्सी साहित्य में अपना विशेष महत्व है। गुलापाच उल्फत लगभग चालीस वर्षीय साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक सेवा के बाद सन् 1977, 19 दिसम्बर में इस दूनिया से विदा हो गये।वे एक यथार्थवादी, प्रगतिशील जन कवि माने जाते हैं जो साधारण जनता के पक्षधर होकर उनके अधिकारों के लिए गद्य एवं पद्य रचना करते हैं।

कूट शब्द : गुलपाचा उल्फत, पश्तो रचानाएँ, फार्सी रचनाएँ, जीवन काल

प्रस्तावना

गुलपाचा उल्फत के जन्म वर्ष और थिति के बारे में मतभेद है, पर यह मतभेद केवल एक साल या कुछ महीनों का अंतर दिखाता है। कुछ मतों के अनुसार उनका जन्म इस्लामी कैलेंडर के (1287 हिज्री शम्सी) में हुआ है। पर प्रायः प्रसिद्ध आलोचकों ने (1288 हिज्री शम्सी) को गुलपाचा उल्फत का जन्म वर्ष माना है।[1]

हो सकता है कि गुलपाचा उल्फत का जन्म 1287 हिज्री के अन्तिम महीनों में या 1288 हिज्री के प्रारंभ में हुआ हो जो दोनों ईसाई सन के 1909 से

बराबर होते हैं तथा विद्वानों ने यह (1909 ई0) गुलपाचा उल्फत का जन्म वर्ष माना भी है।[2]

गुलापचा उल्फत सन 1909 ई0 में अफ़गानिस्तान के लग़मान राज्य जिला क़र्ग़यी के अज़ीज़ ख़ान कस नाम के गांव में जन्में हैं। उनका सम्बन्ध एक शिक्षित तथा रोहानी परिवार से है।उनके पिता का नाम मीरसैय्यद पाचा था। शमसुलहक पीरज़ादा के नाम से एक पश्तून साहित्यकार अपने (उल्फत सोक वः(उल्फत कौन थे) नाम लेख में गुलापचा उल्फत के बारे में लिखते हैं (गुलपाच उल्फत मूल लग़मान राज्य के क़र्ग़यी तहसील के दरे फ़रंग नामक गांव से थे। उनके पिता मीरसैय्यद पाचा ने तत्कालीन परिस्थितियों और समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इसी जिले के एक दूसरे मुहल्ले (अज़ीज़ ख़ान कस) को स्थानांतरण किया और वहाँ बसे। समय बीतने के साथ मीर सैय्यद पाचा का यहाँ के लोगों से मन लगा, लोगों से दोस्ती हुई और यही पर जीना उचित माना तो यहीं पर मकान बनवाकर रहने लगे।)[3]

वे मुसलमानों के आदरपूर्वक जाति (सैय्यद) कुल के थे, पर कभी भी अपने आप को औरों से उपर और महान नहीं मानते थे। माता-पिता ने उसका नाम गुलपाचा रखा। पश्तून जन समाज तथा पश्तो साहित्य में उनका उल्फत उपनाम प्रसिद्ध है। सच यह है कि गुलपाचा के साथ यदि उल्फत न जुड़ जाए नाम कुछ अधूरा सा लगता है। उल्फत का अर्थ है प्रेम, और प्रेम गुलपाचा के स्वभाव में समाया गया था। गुलपाचा उल्फत ने तत्काली भयानक परिस्थितियों के कारण अन्य नामों से भी साहित्य रचना की है। गुलपाच उल्फत के समकालीन तथा पश्तो साहित्य के जाने माने कवि एवं साहित्यकार अब्दुलहैय हबीबी गुलपाचा के बारे में लिखते है (गुलपाचा के साथ उल्फत का उपनाम बहुत उचित है क्योंकि उनका हृदय प्रेमयुक्त है, पर समय और परिस्थितियों के कारण कई अन्य नामों जैसे (ज़रीफ़ अफ़ग़ान, कजूरवाल, मुहताज, सितमदीदा, नवामोज़, नादार, अर्ज़ूमंद,नुक़तरस, नुक़तदान, मुंतज़ेर, शाहिद, हक़बीन, मुंसिफ़, हक़पसंद, दिलसोज़, अमनियत ख्वाह, लोग़तदान, पार्लमानी वकील, दिक्कत पसंद, एतिदाली, मुल्तफित, क़ानूनी, ख़पल, बेड़ः) से भी लेखन कार्य किए हैं।[4]

उल्फत के गद्य साहित्य संकलन के दूसरे खंड का संकलन अब्दुलरहीम ने किया है। इस में ऐसे कई लेख है जो गुलपाचा उल्फत नें इन उपनामों से लिखे हैं।

गुलपाचा उल्फत आज जैसे किसी स्कूल और यूनिवर्सिटी को नहीं गये हैं पर अपने जिज्ञासू स्वभाव के बल पर बहतु कुछ सीखा तथा अपने समाज और जनता की सेवा में सबसे आगे रहें।उनकी शिक्षा के बारे में साहिबगुल ममोजैय लिखते हैं (गुलपाचा उल्फत ने शिक्षा -दीक्षा के क्षेत्र में अनोपचारिक प्रैविट रूप से वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की है। वे औपचारिक और सिस्टमाटिक तौर पर किसी विद्यालय, कॉलिज या अन्य शिक्षा केंद्र को गये नहीं हैं। कारण यह था कि उस समय में यह सविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। उल्फत अपनी फ़ितरत से सीखा। प्रकृति के अंग अंग को गहराई से दिखा और जानने के प्रयास करते रहें हैं। अपने जिज्ञासू स्वभाव से इतना कुछ सीखा के सामान्य लोग स्कूल कॉलिज में नहीं सीख पाते हैं। उन्होंने अपने समय के परम्परागत शिक्षा लग़मान, नन्गरहार, काबुल राज्यों के धार्मिक शिक्षा केंद्रों और प्रसिद्ध विद्वानों से हासिल की। शब्द विचार, वाक्य विचार, तर्क शास्त्र, अर्थ शास्त्र, छन्द शास्त्र आदि को पढ़ा।)[5]

इन विषयों के बारे में बहुत कुछ सीखने के बावजूद भी वे तृप्त नहीं रहे तथा अपने अध्ययन को जारी रखा जिसे उनका ज्ञान भंडार बढ़ा। गुलपाचा उल्फत जीवन के अंत तक पढ़ते रहे,

उन्हें जो ज्ञान मिला उसे गद्य या पद्य के माध्यम से अपने देशवासियों तक पहुँचाने की प्रयास किया है और इस प्रयास में काफ़ी हद तक सफ़ल भी रहे हैं। वे अंतिम सांस तक आम जनता से जुड़े रहे हैं, जनता की समस्याओँ को पास से दिखे, उसके समाधान के लिए मनन किया है, लोगों की अनुभूति से अनुभाव लेकर उसका समाधान निकाला। अपने कलम और प्रतिभा शक्ति पर एक एक लोकप्रिय कवि बने।

गुलापाचा उल्फत की मातृ भाषा पश्तो है। वे पश्तो भाषा में साहित्य सृजन कार्य करते थे, जो पश्तो साहित्य में एक विशेष महत्व रखते है। वे पश्तो साहित्य के आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवि हैं। अफग़ानिस्तान में पश्तो के बाद आधिक फार्सी बोली जाती है। प्रायः अन्य पश्तून लोगों जैसे गुलपा उल्फत फार्सी भाषा भी जानते थे, उसमें अध्ययन करते थे। फार्सी भाषा के सुप्रसिद्ध और माननीय कवियों (मुलाना जलालुद्दीन मोहम्मद बल्ख़ी, फिर्दोसी, जामी, अबूअली सीना बल्ख़ी आदि) की रचनाओं को पढ़ते थे। उन्होंने फारसी भाषा में कविताएँ और कुछ निबंध भी लिखे थे जिसका फार्सी साहित्य में अपना विशेष महत्व है।

गुलपाचा उल्फत अरबी भाषा में भी पढ़ और लिख सकते थे। प्रो0 अब्दुल्लाह बख़तानी ने अपने निबंध में लिखा है ((गुलपाचा उल्फत मूल पश्तो साहित्य के विकास और प्रगति के लिए लिखते थे तथा इसमें उन्होंने सकारात्मक सहयोग भी दिया है। उन्होंने फार्सी में गद्य और किवता दोनों लिखे हैं तथा अरबी में भी उनके कुछ निबंध कार्य मिलते हैं।)[6]

गुलपाचा उल्फत अध्ययन और लेखन कार्य के साथ विभिन्न सरकारी पदों पर भी कार्यव्रत रहे हैं। वे एक सामाजिक कवि तथा राजनीति में प्रवृत साहित्यकार थे। वे ऊँचे पद पर होकर भी सामाजिक समस्याओं का समाधान अपना मूल कर्तव्य और उद्देश्य मानते थे। उन्होंने एक सामान्य कर्मचारी पद से लेकर मंत्री पद तक की जिम्मेदारी निभाई हैं। गुलपाचा उल्फत ने 26 साल की आयु में अपनी प्रथम नौकरी एक सरकारी कर्मचारी के रूप में अरंभ की थी। उन्होंने पहली बार (1314 हिज्री 1935 ई0) में अनीस नामक सरकारी अख़बार के साथ टाइपिस्ट (मुंशी) के रूप में काम अरंभ किया।उन्होंने इस अख़बार के साथ एक साल नौकरी की। यहाँ नौकरी के साथ अपनी साहित्य प्रतिभा और विद्वता की अभिव्यक्ति करते रहें।इस समय उनकी बहुत कविताएँ एवं ललित निबंध देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, जिनके बल पर (काबुल अदबी अंजुमन (काबुल साहित्य समिति) का सदस्य बनें।

सन 1316 हिज्री (1937 ई0) में काबुल अदबी अंजुमन (काबुल साहित्य समिति) और कन्दहार पश्तो अंजुमन (कंदहार पश्तो समिति) के मिश्रण तथा संयुक्ति से (पश्तो टोलना (पश्तो सभा) के नाम पर एक नई संस्था बनी। पश्तो सभा अफगानिस्तान के इतिहास का बहुमुखी अध्ययन, पश्तो भाषा एवं साहित्य की उन्नति,परिवर्तन एवं विकास तथा पश्तो भाषा को एक आधुनिक वैज्ञानिक भाषा बनाने के लिए कार्य करती थी। इस सभा ने (जेरी) के नाम से एक पत्रिका निकालना शुरु किया तथा गुलपाचा उल्फत उसका संपादक बने।

गुलपाचा उल्फत राजनीति में भी सक्रिय रहे हैं। उन्होंने सन् 1949 में नन्गरहार राज्य से लोकसभा पद के लिए चुनाव जीते।वहाँ लोक सभा के सहायक सभापति भी बने। जैसे कविता आम जनता के लिए लिखते थे वैसे लोक सभा में भी आम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए लड़ते थे। सन 1952 में फिर लग़मान राज्य के क़र्ग़यी जिले से अपनी राजनीतिक मोमिंट (वीख़ जल्मी/जागृत युवक) के सहयोग एवं प्रतिनिधित्व में लोक सभा पद के चुनाव जीते और अन्य चार

सालों के लिए संसद सदस्य बने। सन् 1956 ई0 फिर जलालाबाद से लोक सभा के सदस्य चुने गये। कुल मिलाकर 12 साल वे संसद सदस्य रहे जो हमेशा ग़रीब, किसान, मज़दूर तथा आम जनता की अधिकारों के लिए लड़े हैं और हमेशा एकता एवं राष्ट्रता पर बल देते थे।[7]

सन् 1957 में पश्तो सभा के अध्यक्ष और शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय कॉमेटी का सद्स्य बने। 1960 ई0 में पश्तो सभा के अध्यक्षता के साथ साथ अफ़ग़ान-रूस मित्रता कॉमेटी के नेतृत्व की उत्तरदायत्व भी उन्हें सौंप दी गयी।

1964 ई0 मंत्रिमंडल के सदस्य हो गये और कबाइल मंत्रालय के मंत्री बने।

पश्तो साहित्यकार साहिबगुल ममुज़ैय ने लिखा है कि (गुलपाचा उल्फत इतनी व्यस्तता के साथ काबुल विश्वविद्यालय में पश्तो साहित्य और लॉव भी पढ़ाते थे।)[8]

गुलपाचा उल्फत ने चालीस साल साहित्य, राजनीति,शिक्षा तथा सामाजिक क्षेत्र में अपने जनता की सेवा की है।

उल्फत राष्ट्रीय स्तर पर एक जाने माने साहित्यिक, राजनीतिक तथा सामाजिक व्यक्ति थे। उन्होंने साहित्य और राजनीति द्वारा अपनी लोक समाज की बहुमुखी सेवा की है। आपकी इन सेवाओं और अपनी उत्तरदायत्व को सही निभाने के हेतु उन्हें कुछ पुरस्कार भी मिले हैं जो इस प्रकार है, 1 खुश्हाल खान का साहित्यिक पुरस्कार 2, अबूअली सीना का वैज्ञानिक पुरस्कार 3, मुख्य मंत्रालय की ओर से द्वितीय श्रेणी का पुरस्कार 4, पश्तो साहित्य के सितारे का तमगा 5 शिक्षा मंत्रालय का द्वितीय श्रेणी का पुरस्कार आदि।

गुलापाचा उल्फत ने अपने जीवन काल में बहुत सरकारी और व्यक्तिगत यात्राएँ देश विदेश में की हैं। वे हमेशा एक मुसाफिर के तरह घुमक्कड़ रहे हैं इसलिए उनकी कई रचनाओं में मुसाफिर को सम्बोधित किया जाता है और मुसाफिर एक प्रतीक के रूप में भी इस्तिमाल करते हैं। वे अपने एक निबंध में लिखते है ((मुसाफिर ही अपने मंजिल तक पहुंच पाते हैं, जो अब अराम करते हैं जिंदगीभर नाराम रहेगा। अगर मंज़िल को पाना है सफ़र करो। वे देश के कौने कौने तथा गांव गांव जाते थे। ग्रामीण जीवन को निकट से देखते थे, और उनकी मांगो को समझने की कोशिश करते थे।

गुलपाचा उल्फत सन् 1977 ई0 तक जीते हैं। उनकी मृत्यु के बारे में प्रो0 इस्माईल यून लिखते हैं ((उस्ताद/गुरु गुलापाच उल्फत लगभग चालीस वर्षीय साहित्यिक,सामाजिक, राजनीतिक सेवा के बाद सन् 1356 हिज्री के 9वी महीने के 28 तारीख़ (ईसाई सन् के 1977 दिसम्बर के 19) में इस दूनिया से विदा हो गये)[9]

गुलपाचा उल्फत का मज़ार लग़मान राज्य के कर्ग़यी जिले के अजीज़ ख़ान कस नामक गाँव में काबुल- जलालाबाद महामार्ग के किनारे पर स्थित है।

जो लोग मात्र मानव हित और जन समुदाय के सेवा के लिए अपनी पूरी जिंदगी कुर्बान करते हैं, चाहे संसार के हर कौने में हो उनकी मन की बात एक होती है। गुलपाच उल्फत कहते थे ((वह लोग जो 70 साल से ज्यादा जीवित रह सके हैं, बहुत कम हैं। मैं भी दो-तीन साल बाद 70 साल का हो जाऊंगा। अब तक जी रहा हूँ, तो खुद को उन कम लोगों में से हिसाब करता हूँ। स्वस्थ्य पीछले सालों की अपेक्षा कमजूर हुई है पर ज़मीर वैसे ही जवान और रौशन है। अपने जीवन काल में दिल से अपने देश और अपनी जनता की जी मन से सेवा की है, अगर अब मर भी जाऊँ कोई खेद नहीं होगी। अफसोस इतना होगा कि और अपनी जनता की सेवा नहीं कर पाऊंगा। मुझे दफनाने में न कोई फ़जूल खर्च किया जाए और न किसी को कष्ट दिया जाए।)[10]

उल्फत अपनी कलम, राजनीति और चिंतन द्वारा जीवन के अंतिम क्षण तक जनता की सेवा में व्यस्त रहे और इस रास्ते में स्वयं को कभी भी किसी भी तरह के बलिदान से नहीं रोका।

संदर्भ

1. याद लतीफ, दे उल्फत याद,निबंध संग्रह, 1982, पृ 84.
2. वही, पृ 85
3. हाशमी असग़र, दे उल्फत दे शेरोनो मंज़पांगीजा अव जोलीज़ा सेड़ना, हाशमी, 2015, पृ 14
4. वही, पृ 2
5. हाशमी असग़र, दे उल्फत दे शेरोनो मानीजा सेड़ना, 2015, पृ 14
6. वही, पृ 19
7. वही, पृ 23
8. गोरबज़ मीराहमद, दे उल्फत तंज, 2017, पृ 17
9. दे उल्फत नसरी कुलियात, संपादक- इस्माईल यून, 2017, पृ 42
10. वही, पृ 43